समकालीन हिन्दी कविता के विविध आयाम

(Samkalin Hindi Kavita Ke Vividh Aayam)

-: मार्गदर्शक :-
डॉ. अशोकराव मोहेकर

-: संपादक :-
डॉ. दत्ता साकोळे
डॉ. मुकुन्द गायकवाड

-: I S B N :-
978-81-890-35-06-8

-: प्रकाशन तिथि :-
27/01/2017

-: मुद्रक :-
भरत ग्राफिक्स कळंब

-:अक्षर जुळवणी :-
शिंपले मारुती, स्नेहा बनसोडे

-: मुखपृष्ठ :-
गणेश सातपुते

किमत :- २०० रु.

-: प्रकाशक :-
गीता प्रकाशन
रामकोठी, हैद्राबाद

क्र.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
	समकालीन कविता की अवधारणा	शेख जावेद रहेमान	135
	समय संवेदना एवं प्रतिरोध की कविता	कदम गजानन	144
	समकालीन कविता और भारतीय राजनीति	डॉ. केशव क्षिरसागर	149
	समकालीन दलित स्त्री कविता	रंजना बिरादार	156
	राही मासूम रज़ा के काव्य में समकालीन चेतना	लोहकरे किशोर	161
	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में संघर्ष के स्वर	डॉ. एम. के. राऊत	166
	ज्योराज सिंह बेचैन की कविताओं में दलित चेतना	डॉ. सुकुमार भंडारे	171
31.	समकालीन हिंदी कविता	डॉ. वडचकर एस.ए.	180
32.	समकालीन हिंदी कविता में भूमण्डलीकरण	व्यंकट धारासुरे	187
33.	समकालीन हिंदी कविताओं में आदिवासी समस्याएँ	त्रिभुवन दुर्गे	193
34.	समकालीन कविता में काला और सामाजिक विमर्श	विनोद कुमार जाधव	198
35.	अंबेडकरवादी चिंतन और समकालीन हिन्दी दलित कविता	प्रेम कुमार	201
36	समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि	अरुण हेरेमत	210
37.	समकालीन कविता में नारी जीवन विमर्श	ई. सुनीता	213
38.	समकालीन हिंदी कविता और प्रमुखवाद	हेमलता	215
39.	समकालीन हिंदी कविता में लीलाधर जूगड़ी का स्थान	ए. माधवी	219
40.	समकालीन हिंदी कविता में आदिवासी जीवन	के. पद्मावती	223
41.	समकालीन आदिवासी कविता	डी. प्रशांत कुमार	228
42.	समकालीन कविता	डॉ. शिवहर बिरादार	232
43.	समकालीन हिंदी कविता में स्त्रीवादी प्रवृत्तियाँ	टी. सुनिता	237
44.	समकालीन आदिवासी कविता	डॉ. ई. राजा कुमार	241

Late Ramesh Warpudkar (B.C.S.) College, Sonpeth Dist. Parbhani

ISBN :- 978-81-890-35-06-8

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

31. समकालीन हिन्दी कविता

- डॉ. वडचकर एस.ए.
कै. रमेश वरपूडकर महाविद्यालय, सोनपेठ
जि. परभणी
email-sayaliswapnilwsa@gmail.com
Mob: 8083848788

आधुनिक हिन्दी कविता नई कविता के पश्चात समकालिन कविता की ओर अग्रसर होती है। समकालिन कविता आधुनिक हिन्दी का नवीनतम आयाम है। स्थुल रूप से समकालीन कविता वही है। जिसमें समाज कि वर्तमान स्थितिका चित्रणकिया जाता है समकालीन कविता परिदृश्य काफी व्यापक है। समकालिन कविता समाज को हर एक गतिविधी के प्रति पुरी तरह से सचेष्ट है। आज कविता स्थायी भावों को रसात्मक रुप में केवल व्यक्त करती है। समकालीन कविता का उद्देश केवल मानसिक उध्दन्न यथार्थ की सहज प्रस्तुति तक सीमित नही है। वरन वह उन शक्तीयों के विरुध्द जुझारु भूमिका का निर्वाह करती है, जो मनुष्यता के लिए संकट समान है। अनेक विद्वानोंने समकालीन शद पर गहराई से विचार किया है। डॉ. विश्वंभर उपाध्याय - समकालीन कविता अपने समय के मुख्य अन्तर्विरोधी और द्वन्दों की कविता है। समकालीन कविता में जो हो रहा है का सीधा खुलासा है। उसे पढकर वर्तमन काल का बोध हो सकता है, क्योंकि उसमे जीते संघर्ष करते लडते, बौखलाते, तडपते, गरजते तथा ठोकर खाकर सोचते वास्तविक आदमी का परिदृश्य है। समकालीन कविता के बारे में नीरज ठाकूर का मत है आक्रोश तथा व्यंग्य के आनुपातिक मिश्रण के माध्यम से. विसंगतियों के समुद्र में डुबकर मानव जीवन के सर्जनात्मक मूल्यों की तलाश का एक लघु किन्तु संकल्प भरा प्रयास है।

इक्कीसवी सदी का प्रथम दशक समाप्त हो चुका है। भुमण्डलीकरण के कारण सांस्कृतिक परिवेश में व्यापक परिवर्तन आया है। यानी मनुष्य संबंधों को गौण बना दिया है। विसंगतियां हताशा, निराशा, आक्रोश, विद्रोह के बीच मनुष्य दिग्भ्रमित हो रहा है किन्तु जब वह जीवन के विविध पहलुओ पर दृष्टिपात करता है। तो अपनी जमीन अपनी मिट्टी अपने लोग उसकी स्मृति में उभरने लगते है। समकालीन कविता मानव

ISBN :- 978-81-890-35-06-8

के मन में विसंगतियों और विडम्बनाओं के बीच उसके भीतर नय चेतना नवीन उर्जा व उत्साह का संचार करती है। विनोदकुमार शुक्ल के लिए जीवन मूल्य है। वे अपने दुश्मनों से भी दोस्ती निभाने की बात करते है।

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

"अपनी मित्रता बढ़ाकर
संसार भर को मित्र बना लूँ
तब तक अमर रहूँ
तमाम दु:खों के साथ अमर रहूँ
कि एक दिन आयेगा
और उन में एक में रहेगा।"

कवि लीलाधर मण्डलोई अपने नये संग्रह की कवित चिठ्ठियों के माध्यम से अपनी वेदना व्यक्त करते है, कि मनुष्य के पास मनुष्य के लिए व्यक्त नही है, वह मशीन बन गया है, उसकी संवेदना शुष्क हो गयी है इसकी वजह कवि तलाश है।

"वजहों की अनक तहें है
कभी भीतरी तह में उलझकर
हम भूलना शुरु कर देते है।
उन चीजों को बगैर जिनके
हमारे मनुष्य होने का कोई अर्थ नहीं।"

कवि यही जीवन में लौटना चाहता है, तमाम पीडाओं चिन्ताओं के बीच से उन सरोकारो के पास लौटना चाहता है जो उसके मनुष्य होने को सिध्द करते है जैसे पडोस की चिन्ता, विश्व का चिन्तन दुख - दर्द इन सबके बाद कवि मनुष्यता को परिभाषित करता है -

"मैं रह ना चाहता हूँ
जिन्दा लोगों के साथ
मैं थोडा लिखना चाहता हूँ।"

कुण्ठा, घुटन, निराशा, अकेलापन ये सभी तत्व समकालीन कवियों को नई कविता के विरासत में मिले है। आज मनुष्य के जीवन का मशिनी करण इतना अधिक हो चुका है कि इस निराशा और अकेलेपन से वह चाहकर भी अपना पीछा छुडा नही

ISBN :- 978-81-890-35-06-8

सकता। मानव मूल्यों का निर्माण तथा विध्वंस होता रहा है और होता रहेगा। अहिंसा को कोई शक्ती मानता है, तो कोई इसे कायरता भी मानता है। आज की समकालीनता कविता में मोहभंग स्वर हमें धुमिल की कविताओं में सुनने मिलता है -

''आजादी
इस दरिद्र परिवार की बीस साल बिटीया
मासिक धर्म में डूबे हुए क्वांरेपन की आगसे
अन्धे अतीत और लंगडे भविष्य की
चिलन भर रही है।''

समकालीन कविता में श्रीकान्त वर्मा महानगरीय अभिवात्य अधिक मात्रा में देखने मिलता है। उनमें मध्यवर्गीय व्यक्ती का चरित्र उभरा है। जनतन्त्र मखोल उडाते हुए कहते है।

''चेचक और हैजे से
मरती है।
बस्तीयाँ
कैसर से हस्तियाँ
वकील रक्तचाप से
कोई नही मरता
अपने आप से।''

श्रीकांत वर्माजी के कविताओं में सम्पूर्ण विश्व की मानव के प्रति चिन्ता है। यह चिन्ता उन्हें आम आदमी का कवि बनाती है। तो खण्डित मूल्य और महत्त्वकांक्षाओं के जंगल में भटकती व्यवस्था के खिलाफ युध्दरत लोग में डॉ. प्रभा वाजपेयी का नकार और निषेध का दर्शन इस प्रकार व्यक्त हुआ है -

''होना एक शहर का पुरुष,
आदमी की मोत का पर्याय है।
छुरा धोंपरक आपके विवेक को
खोल देता है वह
रेगिस्तान के दरवाजे

ISBN :- 978-81-890-35-06-8

डुबते शहर की मीनारें
उतावली में करती है प्रतिक्षा
अतल में डुब जाने की
इस माहौल में
वे सीधे ईमानदार लोग
होते है शिकार हिंस्त्र पशुओं के।''

स्वत्व - संघर्ष की यह लडाई सावित्री परमार की कविताओं में घनीभूत हो उठी है। उसे लगता है कि हमारे भीतर एक बहुत विशाल इस्पाती कारखाना खुल गया है जहाँ हर साँस के साथ हम इधर - उधर, गली चौराहे पर, राजमार्गो पर खुले आम मानवता को भूलते है। उपलब्धियों के मापदण्ड में अमानवीय जंगलों में भटकती उनकी पीड़ा करुण कठोर स्वरों में गूँज उठती है।

विकास एवं तकनीकी के युग में मनुष्य के बीच होड मची है। नैतिक मूल्य अप्रासंगिक हो चले है, मनुष्य ने जीवन की नई परिभाषा गढ़ ली है। जहाँ संवेदनाएँ मृतप्राय हो चली है, मनुष्य आत्मकेंद्रीत हो रहा है। उसके सामाजिक सम्बन्ध समाप्त हो रहे है। कवि नचिकेत इन विपरीत परिस्थितियों में भी हँसी - खुशी के वातावरण की कल्पना करते है, वे मानते है, यह संघर्षपूर्ण दौर है किन्तु यह सब स्थायी नही है। दुःख के बाद सुख की वापसी होती है। हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नही है, जीवन फीर सक्रिय होगा, एकाकीपन समाप्त होगा, जीवन का सन्नाटा, खुशहाली में बदलेगा -

''सन्नाटा टुटेगा कविता में टुटेगा
मेरे घर का
सन्नाटा भी टुटेगा
हँसी खुशी
उल्लास उमंगों की
बरसाते होंगी
सुख अधरों पर
मुस्कानों की सोगाते होंगी।''

तो दूसरी ओर समाज के गलत मूल्यों से साक्षात्कार करती जेल अधीक्षिका

प्रीती भार्गव का आक्रोश नारी की शापग्रस्त स्थितियों, बलात्कार, दमन और शोषण के प्रति ज्वालामुखी बनकर फुटता है।

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

''जहा जवान लडकियों के नंगे बदन
टाँग दिए जाते है
शहर के चौराहें पर रंगीन पोस्टरों में
मैं उस शहर को वीरान होने शाप देती हूँ।''

नैराश्य, अजनबीपन, और निर्वासन की तपिश को प्रभा ठाकून कुछ यों व्यक्त करती है -

''कब तक और चुकाना है ऋण
मुझसे अक्सर पुछा करते
मेरे बीते अपराधी क्षण
शब्दों की दुकान सजाई
अर्थों की पहचान गँवाई
जाने कब से नजर बन्द है
मेरी कलम, कल्पना स्याही
तिसपर वचन निभाने का प्रण।''

आदिवासियों, गरीबों, विकलांगों एवं मुक बधिरों के नाम तमाम योजनाएँ कार्यान्वित होकर भी उनकी अस्मित दाँवपर लगी है। निरपराधी लोगों को जेल में अपराधी संसद, विधानसभाओं एवं कार्यालयों में गुलछर्रे उडा रहे हैं -

''कल जिससे जेल में ये मिला
यह मैं रोने पर भी रहा शान्त आवेगहीन
बिना कुछ बोले मैं लौट आता हूँ उसके घर
जहाँ फाँसी के हुक्म का इन्तजार करती रही है। एक बहुत बुढी माँ।''

फास्ट फुड होटलों, रेस्टाराओं एवं फिल्मों की वजह से लोग मुँह फट हुए है। हालांकि खाना एवं शान्त एकान्त में होना चाहिए। कवि के शब्दों में -

एक समय था जब सफर में सबके सामने
कौर भी उठनहीं पाता था।-

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

''और खाने की पोटली बिना खाये
मैं घर लौटा आता.....अब मुझे क्या हो गया है।
बच्चों के सामने कुल्फी चाटता चलता हूँ बीच बाजार
कमीज की बाँह बार बार झाडता केश रंगता खुद फिल्म देखता
जेब में कैंगी हाथ में रुमाल.....।''

आज लोग खुन, शरीर एवं किडनी का सौदा करने लगे। प्रायः जिन विडम्बनाओं के बीच आज का व्यक्ती भटक रहा है। वहाँ पारम्पारिक रिश्ते टूटे रहें है और नय रिश्ते बन रहे हैं। फिलाहाल यही तो दुनिया का असली सौगात है।

''ने मिलते ही उसमें
विवाह की सारी तस्वीर दिखायी
फिर अन्दर गया ठंडा पानी और बर्फो ले आया
और सठकर फुस फुसाया जानते हो
जिस डॉक्टर ने मेरे ऑपरेशन किया
वह नर्स से फँसा था।''

कवियत्री निर्मला पुतुल प्रकृति के विनाश व विस्थापन की पीड़ा से ग्रस्त आदिवासी लोगों के प्रति सहयोग व सहानुभूति की कामना करती है, जो समाज और मनुष्य दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। निर्मला जी प्राकृतिक एवं सामाजिक परिवेश को बचानेकी बात करते हुए सावधान करती है कि अब तक हम बहुत कुछ खो चुकेहे परन्तु हमारे पास अभी भी बहुत कुछ बचाने के लिए शेष है। आवश्यकता है दृढ निश्चय के आगे बढ़कर विश्वास कायम करते हो सहयोग व विश्वास जागृत करने की - और इस विश्वास भरे दौर में थोडासा विश्वास, थोडीसी उम्मीद थोडे से अपने आओ मिलकर बचाएँ, कि इस दौर में भी बनाने को, बहुत कुछ बचा है, अब भी हमारे पास।

निर्मलाजी ने अदम्य विश्वास व उम्मीद के साथ मनुष्य की टुटन व पीड़ा का महसुस करते हुए जो कुछ भी शेष बचा हे उसमें नवनिर्माण की कल्पना की है।

निष्कर्ष :-

समकालीन कविता अपने आप में संश्लिष्ट है। समाज की हर एक गतिविधी के प्रति पुरी तरह से सचेष्ट कविता है। यह कविता स्थायी भावों को रसात्मक रुप में

केवल व्यक्त नहीं करती बल्की मनुष्य के जागतिक व्यवहार एवं युग की समग्र चेतना को व्यक्त करती है। यह कविता परमपरा से कटे बिना यथार्थ का बोध कराती है। इसमें आम आदमी के लिए वरदान है, उसकी मुसीबत के विरुध्द एक हाथियार है। वही आदमी के विरोधी हर तत्व के लिए यह प्रतिपक्ष की कविता है ओर अपने सरोकारों संवेदनाओं और काव्य भाषा को बनाये रखने का नाम है।

संदर्भ :-

१) हिन्दी दलित साहित्य की विविध विधाएँ :- डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

२) हिन्दी साहित्य के विविध आयाम :- डॉ. बिमलेश

३) हिन्दी दलित साहित्य आन्दोलन - डॉ. सरोज पगारे

४) हिन्दी साहित्य के विविध स्वर - डॉ. भरत पटेल

५) आलोचन - त्रैमासिक

६) मधुमती - मासिक

७) साहित्य अमृत - मासिक

८) भाषा - त्रैमासिक

९) वागर्थ - मासिक

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

कविता अपने केंद्र को तलाशने के उपक्रम में अपनी प्रविधियों को तलाश कर रही है। संभवतः आख्यान या कहें कि छोटे-छोटे उपाख्यानों का कविता में पुनर्वास इसी कोशिश का परिणाम है। उसमें लगातार बढ़ते हुए विवरण, ब्यौरे, सूचनाओं की शक्ति और उनके वर्चस्व का एक हद तक प्रभाव भी है। लेकिन दूसरे छोर पर वह सूचनाओं के वर्चस्व का प्रतिकार भी है। सारे ब्यौरे या विवरण मात्र सूचनाएँ नहीं है, वे जीवन के लगभग अलक्ष्य किये जाते रहे विवरण भी हैं और जीवनानुभवों को उनके छोटे-छोटे अलक्षित ब्यौरों के साथ दर्ज करने का उपक्रम भी। इस कोशिश ने हमारी भाषा को सघन और गझिन बनाया है। भाषा का फैलाव हुआ है। उसके शब्द सामर्थ्य का विस्तार नहीं है, अनुभव का विस्तार है। आज की कविता के पास विषयों का कोई संकट नहीं है। उसमें एक साथ इतने अधिक चरित्र, घटनाएँ और दृश्य हैं, जो संभवतः पहले कभी नहीं थे। कविता राजनीतिक और वैयक्तिक दायरों का अतिक्रमण करके बाहर आयी है। व्यक्तिगत अनुभव एक सामूहिक अनुभव में अंतर्विलीन होते हुए अपना विस्तार कर रहा है कविता की राजनीतिक दृष्टि उसकी सामाजिकता में अंतर्निहित है।

- राजेश जोशी

ISBN : 978-81-890-35-06-8

9 788189 035068

गीता प्रकाशन
4-2-771, रामकोटी, हैदराबाद